देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

Impact Factor
7.523

ISSN : 2395-7115
नवम्बर 2024
Vol.-20, Issue-5(1)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

वैश्वीकरण के दौर में बदलती सामाजिक व्यवस्था

Guru Nanak Girls College
Sant Pura, Yamuna Nagar

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. गीतू खन्ना,
डॉ. अमनदीप कौर

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग
एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

18. वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित दलित उद्भावना	डॉ. दलीप कुमार	101-107
19. वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित नारी की दशा	डॉ. दीप्ति	108-112
20. वैश्वीकरण के दौर में स्त्री विमर्श और स्त्री लेखन : समकालीन हिंदी कथा साहित्य के संदर्भ में अध्ययन	डॉ. गोपीराम शर्मा	113-119
21. वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित नारी की दशा	डॉ. गुरमीत कौर	120-121
22. वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित प्रवास का दर्द	डॉ. जैस्मीन पटनायक	122-128
23. वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में नारी की दशा	डॉ. ममता कुंवर	129-134
24. वैश्वीकरण एवं जनजातीय कल्याण	डॉ.(श्रीमती)मंजुलता कश्यप	135-139
25. Effect of Globalization on Sports in India	Dr. Meenakshi Gupta	140-143
26. वैश्वीकरण और मूल्य-विघटन की कहानी : साहित्य की जुबानी	डॉ. मीनू नन्दा	144-150
27. वैश्वीकरण के दौर में बदलती सामाजिक व्यवस्था	डॉ. नरेश कुमार	151-157
28. वैश्वीकरण के दौर में बदलती सामाजिक व्यवस्था	डॉ. पूजा शर्मा	158-163
29. वैश्वीकरण के दौर में वैदिक साहित्य में वर्णित वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था	डॉ. पुष्पा शर्मा	164-167
30. वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित समरसता	Dr. R. Kavita	168-172
31. वैश्वीकरण के दौर में सामाजिक समरसता	डॉ. राजश्री लक्ष्मण तावरे	173-176
32. आधुनिक काल में बदलते नारी स्वरूप का चित्रण : कोमल गांधार	डॉ. सिम्मी सिंह	177-181
33. वैश्वीकरण के दौर में हिंदी कहानियों में नारी की दशा	डॉ. सुनीता देवी	182-184
34. वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित नारी की दशा	डॉ. सुरेन्द्र कुमार	185-187
35. चित्रा मुद्गल की कहानियों में दरकते परिवार	डॉ. सुषमा ठाकुर	188-193
36. वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित, परिवर्तित होता पारिवारिक ढाँचा (रामदरश मिश्र के उपन्यासों के संदर्भ में)	डॉ० यज्ञेश कुमार	194-199
37. आर्थिक परिदृश्य में वैश्वीकरण के दबाव में युवाओं पर प्रभाव	डॉ. गीता सराफ	200-205
38. वैश्विक समय और समकालीन हिंदी कविता में जीवन मूल्य	डॉ. प्रिया ए.	206-211
39. वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में दलित विमर्श	कोमल	212-215
40. वैश्वीकरण का प्रभाव और 'पीली छतरी वाली लड़की' में चित्रित विश्वविद्यालय परिसर	कुलसूम	216-222
41. वैश्वीकरण के दौर में उषा प्रियंवदा की कहानियों में विखंडित होते जीवन और मानवीय मूल्य	मोनिका चौहान, डॉ. रीता सिंह	223-227

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
Nov. 2024
ISSN : 2395-7115
Page No. : 120-121
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित नारी की दशा

डॉ. गुरमीत कौर
असिस्टेंट प्रोफेसर, गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज, यमुनानगर।

प्रस्तावना :-

वैश्वीकरण, जिसे हम आधुनिक युग का एक प्रमुख पहलू मानते हैं, एक निरंतर विकसित होती प्रक्रिया है जो विभिन्न देशों के बीच आपसी संपर्क को बढ़ावा देती है। यह वैश्विक व्यापार, सांस्कृतिक आदान–प्रदान और प्रौद्योगिकी में सहयोग के माध्यम से उत्पन्न हुई है। इसकी उत्पत्ति द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हुई, जब देशों ने आर्थिक और राजनीतिक स्थिरता के लिए एक–दूसरे के साथ सहयोग की आवश्यकता महसूस की। वैश्वीकरण ने न केवल आर्थिक दृष्टिकोण से, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी गहरे परिवर्तन किए हैं।

वैश्वीकरण के चलते जो समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं, उनमें राजनीति, संप्रभुता, पारंपरिक संबंधों का ह्रास, और सामाजिक तथा सांस्कृतिक विशेषाधिकारों का लोप शामिल है। यह न केवल सकारात्मक पहलुओं को जन्म देता है, बल्कि नकारात्मक प्रवृत्तियों को भी बढ़ावा देता है, जैसे कि सांस्कृतिक संघर्ष और पारंपरिक मूल्यों का क्षय। ऐसे में, नारी की स्थिति विशेष रूप से बदलती जा रही है।

वैश्वीकरण का अर्थ :

वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय और क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के वैश्विक स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया है। इसका मुख्य उद्देश्य विभिन्न देशों में व्यापार, निवेश, पर्यटन, प्रौद्योगिकी सूचना, और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देना है। यह प्रक्रिया समाज के संरचनात्मक और विकासात्मक ढांचे में निरंतर परिवर्तन करती है।

इस बदलाव के कारण, महिलाओं के वस्तुकरण और व्यवसायीकरण के परिणामस्वरूप भारतीय समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। बड़ी–बड़ी कंपनियाँ अपने उत्पादों और सेवाओं को बेचने के लिए महिलाओं की योग्यता, क्षमताओं और व्यक्तित्व का इस्तेमाल करती हैं। इस प्रकार, वैश्वीकरण के दौरान महिलाओं की मुश्किलें बढ़ी हैं– जैसे कि बढ़ता मशीनीकरण, नौकरियों में सुरक्षा की कमी, पारंपरिक कौशल का ह्रास, और आर्थिक निर्भरता की चुनौतियाँ।

नारी की स्थिति में परिवर्तन :

आधुनिक समाज में नारी की आर्थिक निर्भरता एक बड़ी चुनौती बन चुकी है। चाहे वह उच्च वर्ग की हो या निम्न वर्ग की, शिक्षित हो या अशिक्षित, देहाती हो या शहरी, सभी के सामने अपनी–अपनी समस्याएँ हैं। उच्च

शिक्षा और कार्य कुशलता के माध्यम से, महिलाएँ अब पुरुष समाज में सम्मानित स्थान बनाने में सक्षम हो रही हैं। वैश्वीकरण ने नारी को प्राचीन रूढ़ियों और मर्यादाओं को तोड़ने का अवसर प्रदान किया है।

मन्नू भंडारी ने नारी के इस स्वरूप को संबोधित करते हुए कहा है, 'मैं नहीं जानती कि मेरी कहानियों में कोई ऐसी विशिष्ट नारी है, जो शरद, प्रेमचंद, और जैनेंद्र जैसे कथाकारों के समक्ष अलग से अपनी नई कह सके। बार–बार जिस नारी को मैंने अपनी रचनाओं के द्वारा पहचानना चाहा– वह है आंतरिक संस्कारों, भावनाओं और संवेदनाओं के साथ बाहरी स्थितियों और दबावों को झेलती नारी।'

इस संदर्भ में, बीसवीं सदी में नारी की स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव आया। साहित्य ने नारी पीड़ा और नारी अस्मिता के प्रश्नों को गंभीरता से चित्रित किया। गोपाल राय के 'काठ गुलाब' उपन्यास में, उन्होंने नारी की दयनीय दशा का विश्लेषण किया है। वह बताते हैं कि नारी, चाहे वह किसी भी वर्ग से हो, पुरुष द्वारा श्रम और सेक्स दोनों रूपों में शोषण की शिकार होती है।

उषा प्रियंवदा जैसी प्रवासी लेखिकाएँ भी नारी की स्वतंत्रता की पक्षधर रही हैं। उनके उपन्यास 'रुकोगी नहीं राधिका' में नारी की सुरक्षा की आकांक्षा और उसके उन्मुक्त जीवन के लिए संघर्ष का चित्रण किया गया है। यह नारी अपने अधिकारों और स्वतंत्रता के प्रति जागरूक हो चुकी है।

नारी का समाज में योगदान :

वैश्वीकरण ने नारी को न केवल आर्थिक दृष्टि से सशक्त बनाया है, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में भी उसकी भूमिका बढ़ाई है। वह अब पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ–साथ राष्ट्र निर्माण में भी योगदान दे रही है। जैसे कि श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित, कस्तूरबा गांधी, और हंसा मेहता ने राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया, वैसे ही आज की महिलाएँ भी समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

शिक्षा का प्रसार और फ्रांसीसी क्रांति के प्रभाव के परिणामस्वरूप नारी के मन में पुरुष शोषण के खिलाफ अपनी भूमिका को दर्शाने का जज्बा बढ़ा है। नारी के इस आंदोलनकारी रूप के कारण ही संविधान में 73वें और 74वें संशोधन द्वारा पंचायत और जिला परिषद में 33 प्रतिशत स्थान प्राप्त हुआ है।

निष्कर्ष :

वैश्वीकरण के कारण, आधुनिक नारी अपने आसपास के परिवेश, वातावरण और अधिकारों के प्रति जागरूक हो चुकी है। वह अब अपने अस्तित्व को बनाए रखते हुए सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और पारिवारिक दायित्वों को भली–भांति निभाने में सक्षम है। शिक्षाके प्रचार–प्रसार ने नारी के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए हैं। आज की नारी आत्मनिर्भर होने के साथ–साथ समाज में अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत है और विकास की ओर अग्रसर हो रही है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. मन्नू भंडारी, त्रिशंकु : मन्नू भंडारी के तमाम रंग।
2. डॉ. मधुसंधु, महिला उपन्यासकार।
3. के.एम. मालती, स्त्री विमर्श : भारतीय परिपेक्ष्य।
4. डॉ. सावित्री डागा, आधुनिक हिंदी मुक्तक काव्य में नारी।
5. सोशल मीडिया : इंटरनेट।